ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

संकल्प से सफलता तक: आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी
(पृष्ठ – 02)

तन्हाई को मात देकर स्वावलंबन की ओर
(पृष्ठ – 03)

अंधेरे से उजाले की ओर: ममता देवी के स्वावलंबन का नया अध्याय
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – मई 2026 ।। अंक – 58

सतत् जीविकोपार्जन योजना से बदल रही बिहार की तस्वीरः अत्यंत निर्धन परिवारों का आर्थिक उत्थान

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार सरकार की एक महत्वकांक्षी पहल है, जो जीविका के माध्यम से संचालित हो रही है। यह योजना अत्यंत निर्धन परिवारों को गरीबी के चक्र से बाहर निकालकर स्थायी आजीविका प्रदान करने का कार्य कर रही है। वर्ष 2018 में शुरू हुई इस योजना ने ग्रामीण बिहार की तस्वीर को धीरे–धीरे बदलना शुरू कर दिया है। जहाँ पहले ये परिवार मजदूरी, देशी शराब की बिक्री या अन्य असंगठित कार्यों पर निर्भर थे, वहीं अब वह सूक्ष्म उद्यम, पशुपालन और अन्य गतिविधियों के जरिए आत्मनिर्भर बन रहे हैं।

मार्च 2026 तक इस योजना के तहत 2,01,218 अत्यंत निर्धन परिवारों को लाभान्वित किया गया है। इनमें से 1,97,324 परिवारों को जीविकोपार्जन गतिविधियों के संचालन हेतु निधि उपलब्ध कराया जा चुका है। 1,99,905 परिवारों को सूक्ष्म उद्यम और पशुपालन प्रबंधन पर प्रशिक्षण दिया गया है। सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि 1,71,318 परिवारों को सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत स्नातक घोषित किया जा चुका है (जो अत्यंत निर्धनता की रेखा से बाहर निकल चुके हैं)। इन परिवारों ने इस योजना से प्राप्त सहायता के कारण स्वतंत्र रूप से अपनी आजीविका शुरू कर दी है और अब वह मुख्यधारा में शामिल हो चुके हैं। इसके अलावा 1,01,883 परिवारों ने दो या अधिक जीविकोपार्जन गतिविधियों का संचालन कर रही हैं, जिससे उनकी आय स्थिर और विविध हो गई है।

योजना की सफलता का आधार इसका समग्र दृष्टिकोण है। प्रत्येक अत्यंत निर्धन परिवार की पहचान के बाद उन्हें स्वयं सहायता समूह से जोड़ा जाता है। फिर उन्हें जीविकोपार्जन गतिविधियों के संचालन हेतु परिसंपत्ति, कौशल प्रशिक्षण और 24 महीने तक निरंतर मार्गदर्शन प्रदान की जाती है। मास्टर संसाधन सेवी इन परिवारों को व्यावसायिक परामर्श, बाजार से जुड़ाव और नियमित परामर्श देते हैं। 5,878 मास्टर संसाधन सेवी को विशेष प्रशिक्षण देकर इस कार्य में लगाया गया है। परिणामस्वरूप इस योजना से जुड़े परिवारों की आय बढ़ी है, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार हुआ है तथा महिलाओं की सामाजिक स्थिति मजबूत हुई है।

वित्तीय वर्ष 2026–27 में योजना के तहत 26,006 परिवारों को स्नातक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। साथ ही 40,000 परिवारों को दो या अधिक आजीविका विकल्पों से जोड़ने की योजना है। युवाओं के लिए 5,000 स्किल ट्रेनिंग कार्यक्रम राष्ट्रीय ग्रामीण कौशल एवं उद्यमिता विकास संस्थान तथा बिहार कौशल विकास मिशन के सहयोग से चलाए जाएंगे।

यह योजना बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती प्रदान कर रहा है। अत्यंत निर्धन परिवार अब मुर्गी पालन, बकरी पालन, सब्जी उत्पादन, मधुमक्खी पालन और छोटे उद्यम जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं। इससे पलायन कम हो रहा है और परिवारों का पोषण स्तर सुधर रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इस योजना की सराहना हो रही है। श्रीलंका, केन्या और अन्य देशों के प्रतिनिधिमंडल बिहार आकर इस मॉडल का अध्ययन कर चुके हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बिहार में गरीबी उन्मूलन के पारंपरिक तरीकों से अलग एक नया रास्ता दिखाया है। यह केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि आत्मविश्वास, कौशल और स्थायी आय का निर्माण करती है। योजना के माध्यम से महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है, जो परिवार और समाज दोनों के लिए सकारात्मक परिवर्तन ला रही है।

हालांकि चुनौतियाँ अभी भी बाकी हैं। बाजार पहुँच, गुणवत्ता प्रशिक्षण और जलवायु प्रभाव जैसे मुद्दों पर निरंतर कार्य किया जा रहा है। जीविका इन चुनौतियों का सामना करने के लिए समुदाय आधारित संस्थाओं को मजबूत कर रही है और अन्य सरकारी योजनाओं से समन्वय भी कर रही है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार की ग्रामीण तस्वीर को नई रोशनी दे रही है। अत्यंत निर्धन परिवार अब गरीबी के शिकार नहीं, बल्कि विकास के भागीदार बन रहे हैं। यह योजना साबित करती है कि सही दृष्टिकोण, निरंतर समर्थन और समुदाय की भागीदारी से सबसे पिछड़े वर्ग को भी मुख्यधारा में लाया जा सकता है। आने वाले वर्षों में यह पहल बिहार को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

संकल्प से सफलता तक: आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी

किशनगंज जिले के कोचाधामन प्रखंड की रहने वाली सुविता देवी, अपनी उद्यमिता आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। अत्यंत निर्धन परिवार से आने वाली सुविता दीदी के लिए पहले दो वक्त की रोटी जुटाना भी बड़ी चुनौती थी। लेकिन उनके अटूट हौंसले और बिहार सरकार की सतत् जीविकोपार्जन योजना के सहयोग ने उनकी जिंदगी की दिशा पूरी तरह बदल दी है।

सुविता दीदी बताती हैं कि योजना के अंतर्गत जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत उन्हें पहली किश्त में 30 हजार रुपये की परिसंपत्ति मिली। जिससे उन्होंने सबसे पहले एक छोटी सी मनिहारी दुकान शुरू की। दुकान से थोड़ी–बहुत आमदनी होने लगी, जिससे घर का खर्च चलने लगा। मगर वह कुछ बड़ा करना चाहती थीं। दूसरी किश्त की 67 हजार रुपये की राशि मिलते ही उन्होंने सोच–समझकर एक ऐसा काम चुना, जिसकी गांव में लगातार मांग बनी रहती है। उन्होंने शौचालय निर्माण में इस्तेमाल होने वाले पिट बनाने का काम शुरू कर दिया।

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान के कारण शौचालय निर्माण तेजी से बढ़ रहा था, इसलिए उनका यह निर्णय पूरी तरह सही साबित हुआ। शुरुआत में लोगों का भरोसा जीतना आसान नहीं था, लेकिन सुविता दीदी ने अपनी मेहनत और बेहतरीन गुणवत्ता से सबका विश्वास जीत लिया। धीरे–धीरे उनके बनाए पिट की मांग आसपास के कई गाँवों तक फैल गई। आज स्थिति यह है कि इस काम से उन्हें हर महीने 15 हजार रुपये से अधिक की आमदनी हो रही है। उनकी वार्षिक आय अब 1.5 लाख रुपये तक पहुँच गई है।

यह आय न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत बना रही है, बल्कि बच्चों की पढ़ाई और बेहतर भविष्य के सपनों को भी नई उड़ान दे रही है। सुविता दीदी कहती हैं, "पहले हम सोचते थे कि गरीबी हमारी किस्मत है, लेकिन अब लगता है कि मेहनत और सही अवसर मिल जाए तो कोई भी आगे बढ़ सकता है।" वह बताती हैं कि सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उनके जीवन को सँवारा है। नियमित आमदनी से घर में खुशहाली आई है।

संजू देवी की आत्मनिर्भरता और स्वरोजगार की अनूठी कहानी

यह कहानी शेखपुरा जिले के चेवाड़ा प्रखंड के एकाढ़ा ग्राम की रहने वाली संजू देवी की है, जिन्होंने जीविका से जुड़कर न केवल अपनी गरीबी को मात दी, बल्कि समाज के लिए आत्मनिर्भरता की एक मिसाल भी पेश की है।

जब उनके गाँव में ग्राम संगठन द्वारा अत्यंत निर्धन परिवार की पहचान हेतु सर्वेक्षण किया गया, तो संजू देवी की दयनीय स्थिति को देखते हुए उन्हें इस योजना के लिए पात्र पाया गया। हालांकि वह शुरुआत में व्यवसाय करने को लेकर संकोचित थीं, लेकिन ग्राम संगठन की अन्य दीदियों के प्रोत्साहन पर उन्होंने श्रृंगार की दुकान खोलने का निर्णय लिया। उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये की सहायता से दुकान का बुनियादी ढांचा तैयार करने और फिर जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 20,000 रूपये की परिसंपत्ति मिली। इसके अतिरिक्त, शुरुआती सात माह तक उन्हें जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में 1,000 रूपये प्रति माह की दर से कुल 7000 रूपये की सहायता भी प्रदान की गई।

व्यवसाय के शुरुआती दिनों में बिक्री कम थी, लेकिन संजू देवी के धैर्य ने रंग दिखाया। आज उनकी श्रृंगार की दुकान का व्यवसाय फल–फूल रहा है। वर्तमान में उनकी दैनिक बिक्री 2,000 रूपये से 2,500 रूपये तक पहुँच गई है, जिससे वह प्रतिमाह 8,000 रूपये से 10,000 रूपये आय अर्जित कर रही हैं। दुकान चलाने के अलावे वह बकरी पालन का कार्य भी कर रहें हैं।

आर्थिक मजबूती का असर उनके परिवार पर भी दिखा। उन्होंने अपने बच्चों का विवाह और शिक्षा की जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाईं। आज उनके पास 92,000 रूपये की कुल परिसंपत्ति है। कभी दूसरों के सामने हाथ फैलाने को मजबूर संजू देवी आज गर्व से कहती हैं कि वह आत्मनिर्भर हैं। उनकी यह यात्रा दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन और दृढ़ इच्छाशक्ति से एक महिला कैसे अपने पूरे परिवार का भविष्य संवार सकती है।

तन्हाई को मात देकर स्वावलंबन की ओर

कटिहार जिले के मनिहारी प्रखंड अंतर्गत बनीपुर ग्राम की कुमारी कामों दीदी की जीवन यात्रा संघर्ष और पुनर्जन्म की एक कहानी है। मात्र 14 वर्ष की आयु में विवाह के बंधन में बँधने वाली कामों दीदी का जीवन तब अंधकारमय हो गया, जब शादी के दो साल बाद ही उनके पति ने उनको छोड़ दिया। सामाजिक उथल–पुथल और पारिवारिक कलह के बीच भाई–भाभी से हुए बंटवारे ने भी उन्हें पूरी तरह तोड़ दिया था। पेट पालने के लिए वह दूसरों के घरों में झाड़ू–पोछा और मजदूरी करने को मजबूर थीं, जिससे परिवार का भरण–पोषण भी मुश्किल से हो पाता था।

उनके जीवन में बदलाव की किरण तब आई जब उनकी दयनीय स्थिति को देखते हुए सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत उनका चयन किया गया। मास्टर संसाधन सेवी द्वारा उन्हें व्यावसायिक साक्षरता और सामाजिक मुद्दों की जानकारी दी गई। योजना के तहत उन्हें किराना दुकान के लिए जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 20,000 रूपये की परिसंपत्ति, विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रूपये प्रदान की गई। इसके अलावा जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में 1,000 रूपये प्रति माह की दर से सात माह में कुल 7000 रूपये की सहायता प्रदान की गई।

आज कामों दीदी की स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है। वह न केवल स्वयं शहर जाकर दुकान के लिए सामान लाती हैं, बल्कि सफलतापूर्वक अपनी किराना दुकान चला रही हैं। साथ ही उन्होंने आय बढ़ाने के लिए गाय और बकरी पालन भी शुरू किया है। वर्तमान में उनकी दुकान की दैनिक बिक्री 900 रूपये से 1,000 रूपये है,जिससे उनकी मासिक आय 7,000 रूपये से 8,000 रूपये है। उनकी कुल परिसंपत्ति अब लगभग 70,910 रूपये का है।

आर्थिक मजबूती के साथ उनमें नया आत्मविश्वास जगा है। अब वह अपना नाम लिखना जानती हैं और खुद बैंक जाकर पैसे भी जमा करती हैं। सरकारी योजना से उनके आवास का निर्माण कराया गया है और राशन कार्ड बनवाया गया है जिसका लाभ भी उन्हें मिल रहा है। भविष्य में वह अपनी दुकान में फ्रिज लगाकर व्यवसाय को और बड़ा करना चाहती हैं।

बहुआयामी स्वरोजगार से रची आर्थिक स्वावलंबन की नई इबारत

बिहार के बांका जिले के कटोरिया प्रखंड अंतर्गत कथौन पंचायत के गरना गाँव की रहने वाली अमिया देवी आज अपने क्षेत्र की महिलाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। पहले अमिया देवी की आर्थिक स्थिति काफी कमजोर थी। परिवार की बुनियादी जरूरतों को पूरा करना भी एक बड़ी चुनौती थी। लेकिन जनवरी 2022 में सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत हुए उनके चयन ने गरीबी के चक्र को तोड़ने का मार्ग प्रशस्त किया।

इस योजना के तहत जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20,000 रूपये की परिसंपत्ति, 10,000 रूपये की विशेष निवेश निधि की राशि और 7,000 रूपये की जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि का अमिया देवी ने अत्यंत सूझबूझ के साथ उपयोग किया। उन्होंने केवल एक व्यवसाय तक सीमित रहने के बजाय अपनी आय के स्रोतों का विस्तार किया। उन्होंने न केवल एक किराना दुकान खोली, बल्कि पशुपालन (गाय और बकरी) और डेकोरेशन व्यवसाय जैसे विविध क्षेत्रों में भी हाथ आजमाया। विभिन्न प्रकार के क्षमतावर्धन और प्रशिक्षणों ने उनके व्यवसायिक कौशल को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इन संगठित प्रयासों का परिणाम आज उनकी आर्थिक उन्नति के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है। उनकी मासिक आय अब तकरीबन 12,000 रूपये हो गई है। इसमें किराना दुकान से 8,000 रूपये, डेकोरेशन व्यवसाय से 3,500 रूपये और पशुपालन से 500–1000 रूपये का योगदान रहता है। वर्तमान में उनके पास 75,000 रूपये मूल्य की परिसंपत्ति है।

आर्थिक मजबूती के साथ–साथ अमिया देवी ने सरकारी योजनाओं का लाभ उठाकर अपने जीवन स्तर को भी सुधारा है। आज उनके पास अपना पक्का घर, बिजली कनेक्शन, व्यक्तिगत नल कनेक्शन, शौचालय एवं पशु शेड जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, वह राशन कार्ड, आयुष्मान भारत, और बीमा जैसी सामाजिक सुरक्षा योजनाओं से भी आच्छादित हैं। अमिया देवी की यह सफलता दर्शाती है कि सही संसाधन और विविधीकृत सोच के साथ एक ग्रामीण महिला भी उद्यमिता के शिखर तक पहुँच सकती है।

अंधेरे से उजाले की ओर: ममता देवी के स्वावलंबन का नया अध्याय

बिहार के गया जिले में स्थित बोधगया प्रखंड की नवां पंचायत का सिराजपुर गाँव आज एक ऐसी महिला की जीवटता का गवाह बन रहा है, जिसने नियति का मार को अपनी मेहनत से मात दी है। यह कहानी ममता देवी की है, जिनका जीवन कमलेश मांझी के साथ विवाह के बाद सामान्य रूप से चल रहा था। लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। एक गंभीर बीमारी ने उनके पति को उनसे छीन लिया। उनके पति घर के एकमात्र कमाऊ सदस्य थे, जिनके चले जाने के बाद ममता देवी के सिर पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा। तीन मासूम बच्चों की जिम्मेदारी और रोजगार का कोई ठोस जरिया न होने के कारण उनके सामने अंधकारमय भविष्य खड़ा था। वह मजदूरी करके और सरकार से मिलने वाली सामाजिक सहायता के भरोसे अपने बच्चों का पेट पालने को मजबूर थीं।

ममता देवी के जीवन में आशा की नई किरण फरवरी 2021 में तब आयी, जब सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत शंकर जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा उनका चयन किया गया। सामुदायिक संसाधन सेवी दल द्वारा उनके संघर्षों का मूल्यांकन किया और उन्हें इस कल्याणकारी योजना से जोड़ा गया। यह केवल सहायता मात्र नहीं थी, बल्कि ममता को एक उद्यमी बनाने की दिशा में पहला कदम था। उन्हें योजना के अंतर्गत 20,000 रूपये का जीविकोपार्जन निवेश निधि, 10,000 रूपये की विशेष निवेश निधि और प्रारंभिक संघर्ष को कम करने के लिए प्रति माह 1000 रूपये की दर से सात माह में 7,000 रूपये का जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि प्रदान किया गया। इस योजना के तहत मिले प्रशिक्षण और मार्गदर्शन ने ममता के भीतर छिपे आत्मविश्वास को जगाया।

ममता देवी ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए घर के पास सड़क किनारे एक छोटी सी श्रृंगार की दुकान खोली। स्थान के उचित चुनाव के कारण उनकी दुकान जल्द ही ग्राहकों की पसंद बन गई। यहाँ से जो आय हुई, उसे उन्होंने केवल उपभोग में खर्च नहीं किया, बल्कि व्यवसाय के विविधीकरण में लगाया। उन्होंने एक सिलाई मशीन खरीदी और कपड़ा सिलाई का कार्य भी शुरू किया। उनकी उद्यमशीलता यहीं नहीं रुकी। उन्होंने अपनी आय के स्रोतों को और मजबूत करने के लिए बकरी पालन और एक छोटी किराना दुकान की भी नींव रखी। आय के एक से अधिक माध्यमों ने उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया।

वर्तमान में, ममता देवी की स्थिति उस अतीत से कोसों दूर है जहाँ वह एक–एक पैसे के लिए मोहताज थीं। आज वह प्रतिमाह लगभग 8 हजार से 10 हजार रूपये की आय अर्जित कर रही हैं और उनकी कुल संपत्ति का मूल्य 61,165 रूपये तक पहुँच चुका है। उनके बैंक खाता में जमा 8,000 रूपये की बचत, उन्हें भविष्य की अनिश्चितताओं से सुरक्षा प्रदान करती है। आर्थिक समृद्धि के साथ–साथ उनके जीवन स्तर में भी व्यापक सुधार आया है। आज उनके पास सुरक्षित घर, शौचालय और नल–जल जैसी बुनियादी सुविधाएँ भी हैं। साथ ही आयुष्मान कार्ड और बीमा के माध्यम से उनका स्वास्थ्य कवरेज भी सुनिश्चित है। उनके बच्चों के जीवन में सबसे बड़ा बदलाव शिक्षा के रूप में आया है। अब वह न केवल स्कूल जा रहे हैं, बल्कि ममता उन्हें घर पर ट्यूशन की सुविधा भी उपलब्ध करा रही हैं।

ममता देवी का सफर अभी थमा नहीं है। उनकी आँखों में अब बड़े सपने हैं। वह अपनी श्रृंगार और किराना दुकान का विस्तार कर नजदीकी बाज़ार में एक थोक दुकान खोलने का लक्ष्य रखती हैं। वह चाहती हैं कि उनके बेटे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सम्मानजनक रोजगार से जुड़ें। ममता देवी की यह गाथा इस बात का जीवंत प्रमाण है कि यदि सही समय पर उचित संसाधन और सरकार का सहयोग मिले, तो समाज की सबसे वंचित महिला भी न केवल आत्मनिर्भर बन सकती है, बल्कि पूरे परिवार की तकदीर बदल सकती है। सतत् जीविकोपार्जन योजना उनके लिए केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि उनके गौरवपूर्ण अस्तित्व की पुनर्स्थापना का जरिया भी बनी है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार